

क्रिप्स प्रस्ताव (1942 March) :- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों से सहयोग प्राप्त करने के लिए क्रिप्स प्रस्ताव भारत आया। इसने भारतीयों के आगे यह प्रस्ताव रखा कि यदि द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीय उनका साथ देंगे तो युद्ध के बाद एक भारतीय संघ बनाया जाएगा। राज्यों की स्वायत्तता दी जाएगी। वायसराय के परिषद में भारतीयों की संख्या बढ़ा दी जाएगी। एक बार council का गठन किया जाएगा जिसमें भारतीय भी होंगे। Congress ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। गाँधीजी ने इसे Post Dated Cheque कहा। जवाहर लाल नेहरू ने उसे दिवालीया होने वाला Bank शब्द जोड़ दिया। क्रिप्स प्रस्ताव अंततः असफल हो गया।

भारत छोड़ो आंदोलन (8 Aug. 1942) :- क्रिप्स प्रस्ताव के असफलता के बाद महात्मा गाँधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव रखा इन्होंने इस आंदोलन की रूप रेखा तैयार करने की जिम्मेदारी जवाहर लाल नेहरू को दी। जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि आज मैं द्विधारी तलवार से खेलने जा रहा हूँ। यह आंदोलन 8 अगस्त, 1942 को मुम्बई के ग्वालियर टैंक मैदान से प्रारंभ होना था किन्तु अंग्रेजों ने Operation Zero Hour के तहत सभी नेताओं को रात में ही गिरफ्तार कर लिया। अतः यह आंदोलन नेतृत्वविहिन हो गया। गुप्त रूप से मदन मोहन मालवीय ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया इन्हें महामना कहा जाता है। उषा मेहता ने रेडियो पर इसका प्रसारण कर दिया। राजेन्द्र प्रसाद को पटना के बांकीपुर जेल में गिरफ्तार किया गया। जय प्रकाश नारायण को हजारीबाग जेल में गिरफ्तार किया गया किन्तु वे जेल का दिवार फांद कर भाग गए। महात्मा गाँधी तथा सरोजनी नायडु को आग खाँ पैलेस में गिरफ्तार किया गया। महात्मा गाँधी ने भुख हड़ताल कर दिया। अंग्रेजों ने महात्मा गाँधी के अंतिम संस्कार की तैयारी कर दी जिस कारण गाँधीजी ने भुख हड़ताल त्याग दिया। 9 अगस्त, 1942 को महात्मा गाँधी ने करो या मरो का नारा दिया। भारत छोड़ो आंदोलन को अगस्त क्रांति भी कहा जाता है। इसी आंदोलन के दौरान 11 अगस्त, 1942 को पटना सचिवालय पर तिरंगा झंडा लहराने के लिए विद्यार्थी का एक समूह आगे बढ़ा जिस पर पटना के जिलाधिकारी आर्यस ने गोली चलवा दी जिसमें सात विद्यार्थी शहीद हो गए। इस घटना को सचिवालय हत्याकाण्ड कहते हैं। इसी आंदोलन के दौरान बलिया में चितु पाण्डेय ने अपनी स्वतंत्र सरकार की स्थापना कर दिया। नाना पाटिल ने महाराष्ट्र के सतारा में समांतर सरकार की स्थापना कर दिया। यह सरकार सबसे लम्बे समय तक चली थी। इस आंदोलन में महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस समय के वायसराय लिनिथगो ने भारतीयों के दमन के लिए हवाई जहाज से गोली चलाने का निर्णय लिया। यह आंदोलन स्वतः समाप्त हो गया।

वेवेल योजना :- लिनिथगो के बाद भारत के वायसराय वेवेल बने इन्होंने भारत के सभी राजनीतिक दलों में आपसी समनमय बनाने के लिए तथा भारत की स्थिति समान्य बनाने के लिए 14 जून, 1945 को एक योजना बनाई इस योजना को वेवेल योजना कहते हैं। वेवेल योजना पर विचार विमर्श करने के लिए भारत के गृष्मकालीन राजधानी शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसे शिमला सम्मेलन कहते हैं।

शिमला सम्मेलन (25 June 1945) :- इस सम्मेलन में विभिन्न राजनीतिक दलों के 22 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुस्लिम लिग की ओर से जिन्ना तथा कांग्रेस की ओर से अबुल कलाम आजाद ने भाग लिया। इसमें वेवेल योजना के प्रावधानों को बताया गया जिसकी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं—

- (i) वायसराय के 14 सदस्यी परिषद में वायसराय तथा सेनापति का पद ब्रिटेन के पास रहेगा। शेष 12 पदों पर भारतीय रहेंगे।
- (ii) परिषद में भारतीय 12 सदस्यों में 6 मुस्लिम तथा 6 हिन्दु सदस्य रहेंगे। अर्थात् हिन्दु तथा मुस्लिम की संख्या समान रहेगी।
- (iii) द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद भारतीय खुद का संविधान बनाएंगे।

विवाद का कारण :- मुस्लिम लिग का कहना था की 6 मुस्लिम सदस्य का चुनाव मुस्लिम लिग से ही किया जाए, जिस पर कांग्रेस सहमत नहीं थी। जिस कारण 14 जुलाई, 1945 को लॉर्ड वेवेल ने यह घोषणा कर दिया कि शिमला सम्मेलन विफल हो गया। शिमला सम्मेलन के विफलता के बाद मुस्लिम लिग ने 16 अगस्त, 1946 को प्रत्यक्ष कारवाई दिवस मनाया।

नौसेना विद्रोह :- (INS – तलवार) के सैनिकों ने 19 फरवरी, 1946 को भेदभाव के कारण विद्रोह कर दिया। देखते-ही-देखते विद्रोहियों की संख्या 5000 हो गई इन सैनिकों ने आजाद हिंद फौज का विल्ला (logo) लगाया तथा आजाद हिंद

फौज का झंडा लहराया जिस पर दहाड़ता हुआ शेर बना था। अंग्रेजों ने यह निर्णय लिया की पूरी जहाज को डुबा दिया जाए सरदार पटेल के मध्यस्थता में 25 फरवरी, 1946 को विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसे ही नौ सेना विद्रोह कहते हैं।

कैबिनेट मिशन (मार्च 1946) :- इंग्लैंड ने लेवर पारी के प्रधान मंत्री क्लीमेंट एटली ने यह घोषणा किया की 1948 तक ब्रिटिश हिन्दुस्तान छोड़ देंगे। इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए एटली ने अपने कैबिनेट मंत्रियों को भारत भेजा जिसे कैबिनेट मिशन कहते हैं। जिसमें 3 मंत्री थे।

- (i) क्रिप्स (ii) एलेक्जेंडर (iii) लारेंस

Trick – KAL

कैबिनेट मिशन के अध्यक्ष लारेंस थे। कैबिनेट मिशन दो प्रावधान किए—

(i) **संविधान सभा**— जिसमें 389 सदस्य थे।

(ii) **अंतरिम सरकार (Provisional Government)**— अंतरिम सरकार के अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे। कैबिनेट मिशन ने पृथक पाकिस्तान के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया जिस कारण भारत में समप्रदायिक दंगे बढ़ने लगे।

माउटबेटेन योजना :- माउटबेटेन को वायसराय बनाकर भारत भेजा गया उन्हें यह विशेष हिदायत दिया गया कि यथासंभव भारत को संयुक्त रखा जाए। माउटबेटेन ने भारत को संयुक्त रखने का प्रयास किया किन्तु सामप्रदायिक तनाव के कारण बालकन प्लान के तहत भारत का विभाजन कर दिया गया। 4 जुलाई, 1947 को भारत के स्वतंत्रता का विधेयक ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया। 18 जुलाई को भारतीय स्वतंत्रता विधेयक पारित हो गया। 14 अगस्त को पाकिस्तान का निर्माण हुआ तथा 15 अगस्त को भारत की स्वतंत्रता मिली।

अंतरिम सरकार :- इसका निर्माण क्लीमेंट एटली ने 2 सितम्बर, 1946 में किया उस समय वायसराय लॉर्ड वेवेल थे। अंतरिम सरकार के अध्यक्ष लॉर्ड वेवेल थे तथा उपाध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे।

अंतरिम सरकार के मंत्री :-

- (i) जवाहर लाल नेहरू – प्रधानमंत्री
- (ii) सरदार पटेल – गृह, सुचना प्रसारण
- (iii) राजेन्द्र प्रसाद – कृषि एवं खाद्य आपूर्ति
- (iv) बलदेव सिंह – रक्षा मंत्री
- (v) जान मथई – उद्योग मंत्री
- (vi) लियाकत अली – वित्त मंत्री
- (vii) अरुणा असफ अली – रेल मंत्री
- (viii) होमी जहांगीर भाभा – ऊर्जा मंत्री
- (ix) योगेन्द्र नाथ – कानून मंत्री
- (x) राजगोपालाचारी – शिक्षा मंत्री
- (xi) जगजीवन राम – श्रम मंत्री

Note : 1951, 52 के चुनाव के फलस्वरूप बनने वाली पहली सरकार में विदेश मंत्री जवाहर लाल नेहरू तथा शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद थे।

प्रेस अधिनियम :- भारतीय प्रेस का इतिहास

- ☞ भारत में प्रेस का प्रारंभ 1556 में पुर्तगालियों ने गोवा से किया। 1780 में जेम्स हिककी ने भारत का पहला अखबार बंगाल गजट प्रकाशित किया। चार्ल्स मेडकाफ को भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।
- ☞ 1878 में लॉर्ड रिटन ने भारतीय प्रेस का गला घोटने वाला अधिनियम वर्नाकुलर एक्ट लाया। यह भारतीय भाषाओं में छापे जानेवाले अखबारों पर लागू होता था। इसके तहत अखबार छापने से पहले अंग्रेजों से अनुमति लेनी होती थी। इस अधिनियम के द्वारा ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की पत्रिका सोम प्रकाश को प्रतिबंधित कर दिया गया था। वर्नाकुलर एक्ट से बचने के लिए शिशिर कुमार घोष तथा मोतीलाल घोष ने अपनी अमृत बाजार पत्रिका को बंगाली से अंग्रेजी में कर दिया। पाइनियर अखबार ने वर्नाकुलर एक्ट का समर्थन किया था। क्योंकि पाइनियर अंग्रेजी भाषा का अखबार था। लॉर्ड रिपन ने वर्नाकुलर एक्ट को समाप्त कर दिया।

- ☞ **भारत में बने कारखाना अधिनियम :** अंग्रेजों ने कारखाना अधिनियम के तहत कर्मचारियों के काम करने की अवधि उनकी सुविधाएं इत्यादि को निर्धारित किया।
- ☞ **प्रथम कारखाना अधिनियम (1881) :** यह लॉर्ड रिपन के समय आया इसके द्वारा कार्य करने की अवधि 9 घंटा निर्धारित की गई तथा महीने में चार दिन छुट्टी की व्यवस्था निर्धारित की गई।
- ☞ **द्वितीय कारखाना अधिनियम (1891) :** यह लेंस डाउन के समय आया इसके द्वारा कार्य करने की अधिकतम अवधि 11 घंटे निर्धारित की गई इसमें रात के समय महिलाओं के कार्य करने पर प्रतिबंध लगाया गया था।
- ☞ **तीसरा कारखाना अधिनियम (1911) :** यह हार्डिंग द्वितीय के समय आया इसके द्वारा कार्य करने की अधिकतम अवधि 12 घंटा निर्धारित की गई।
- ☞ **चौथा कारखाना अधिनियम (1922) :** लॉर्ड रिडिंग
- ☞ **पांचवां कारखाना अधिनियम (1934) :** वेलिंगटन
- ☞ **छठा कारखाना अधिनियम (1946) :** वेवल - यह भारत का अंतिम कारखाना अधिनियम था।

गवर्नर जनरल एवं वायसराय

- ☞ बंगाल का गवर्नर - रॉबर्ट क्लाइव
- ☞ बंगाल का अंतिम गवर्नर - वारेन हेस्टिंग्स
- ☞ बंगाल का पहला गवर्नर जनरल - वारेन हेस्टिंग्स
- ☞ बंगाल का अंतिम गवर्नर जनरल - विलियम बैंटिक
- ☞ भारत का पहला गवर्नर जनरल - विलियम बैंटिक
- ☞ भारत का अंतिम गवर्नर जनरल - लॉर्ड कैनिंग
- ☞ भारत का पहला वायसराय - लॉर्ड कैनिंग
- ☞ भारत का अंतिम वायसराय - माऊण्टबेटेन
- ☞ स्वतंत्र भारत का पहला गवर्नर जनरल - माऊण्टबेटेन
- ☞ स्वतंत्र भारत का अंतिम गवर्नर जनरल - राज गोपालाचारी

Note : यह एक मात्र भारतीय गवर्नर जनरल थे।

रॉबर्ट क्लाइव (1757-1760) :- इसने बंगाल में द्वैध शासन प्रारंभ किया।

वारेन हेस्टिंग्स (1774-1785) :- इसके समय पिट्स इंडिया एक्ट राजस्व वसूलने के तहत कलेक्टर का पद, मद्रास अधिनियम, प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध, द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध, यह बंगाली तथा अरबी भाषा का अच्छा जानकार था। जब यह लंदन लौट कर गया तो इसपर महाभियोग लाया गया। किन्तु पारित नहीं हो पाया।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786-93) :- इसे नागरिक सेवा का जनक कहते हैं। इसने कर्मचारियों का वेतन बढ़ाया, स्थायी बंदोबस्त लाया। जमिंदारों की शक्ति को कम किया, दारोगा का पद लाया तथा चल आदलत की स्थापना किया। इसका मकबरा U.P. के गाजीपुर में है।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) :- इसने सहायक संधि लाई, जिसे सबसे पहले हैदराबाद ने माना इसे बंगाल का शेर कहते हैं। इसने बंगाल में फोर्ट विलियम कालेज बनाया।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1818-1823) :- इसके समय नेपाल युद्ध हुआ इसने संगोली के संधि के द्वारा इसने अंग्रेजों की अधिपतता स्वीकार करवाया। इसने पिण्डारियों का अंत कर दिया तथा मद्रास में रैयतवाड़ी व्यवस्था लाया और शिक्षा पर प्रतिवर्ष 1 लाख रुपया खर्च करने का प्रावधान किया।

विलियम बैंटिक (1828-1835) :- इसने सती प्रथा, ठगी प्रथा तथा शिशु हत्या पर प्रतिबंध लगा दिया।

लॉर्ड डलहौजी (1848-1856) :- इसे आधुनिक भारत का जनक कहते हैं। इसने रेल, डाकतार, PWD प्रारंभ किया। इसने शिक्षा के क्षेत्र में 1854 में Wood's Dispatch का नियम लाया, जिसे अंग्रेजी शिक्षा का मैगनाकाटा कहते हैं। इसने 1848

में राज्य हड़पनीति (त्यपगत सिद्धांत) (Doctring of Lapes) लाया। इसके तहत सबसे पहले उसने सतारा को हड़प लिया। इसने पंजाब पर अधिकार करके कोहिनूर हिरा इंगलैंड भेज दिया।

लॉर्ड कैनिंग (1856-1862) :- इसके समय 1857 का विद्रोह हुआ और इलाहाबाद के संधि के तहत इस्टइंडिया कम्पनी को समाप्त कर दिया गया।

लॉर्ड एलीन (1862-1863) :- इसके समय वहावी आंदोलन का अंत हो गया जिसका केंद्र पटना था।

लॉर्ड मेयो (1869-1872) :- इसने पहली बार जनगणना प्रारंभ किया किन्तु अधुरी जनगणना किया। अंडमान में इसकी हत्या एक अफगानी सैनिक ने कर दी।

लॉर्ड लिटन (1876-1880) :- इसने आमर्स एक्ट द्वारा भारतीयों को हथियार रखने पर रोक लगा दिया। इसने सिविल सेवा का आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया। इसने भारतीय प्रेस का गला दबाने के लिए वर्नाकुलर एक्ट लाया जिसके तहत भारतीय भाषाओं में अखबार छापने पर पहले अंग्रेजों को दिखाना होता था। अन्यथा अंग्रेज उस अखबार की संपत्ति जब्त कर लेते थे।

लॉर्ड रिपन : (1880 - 1884) :- इसने लिटन की गलतियों को सुधारने का प्रयास किया। इसने आमर्स एक्ट तथा वर्नाकुलर एक्ट को समाप्त कर दिया। सिविल सेवा की आयु 19 से 21 वर्ष कर दिया। इसके समय 1881 में पहली बार पुर्ण जनगणना हुई। शिक्षा के लिए हण्टर आयोग का गठन किया गया। इसके समय इलबर्ट बिल पारित हुआ। जिसके तहत भारतीय जज अंग्रेजों को सजा सुना सकते थे। जिसकारण अंग्रेजों ने इसका विरोध कर दिया। जिस कारण इसे श्वेत विद्रोह कहा जाता था। इस विल को वापस ले लिया गया।

Note : फ्लोरेन्स नाइटिंगल इटली की नर्स थी। इन्हें Lady with the Lamp कहा जाता है। यह किमिया युद्ध में घायल सैनिकों की सेवा करती थी।

लॉर्ड डफरिन (1884 - 1888) :- इसके समय कांग्रेस की स्थापना हुई इसने कांग्रेस को मुठ्ठी भर लोगों का संगठन कहा।

लार्ड कर्जन (1899-1905) :- इसके समय बंगाल विभाजन हुआ। पुरातत्व विभाग की स्थापना। इसके समय अत्यधि क आयोग का गठन किया गया जैसे पुलिस सुधार आयोग, विश्वविद्यालय आयोग, आकाल आयोग। जिस कारण इन्हें आयोगों का कार्यकाल कहा जाता है।

मिंटो II (1905-1910) :- इसके समय मुस्लिम लिग की स्थापना हुई। 1909 में भारत के राज्य सचिव मार्ले थे और इन्होंने मार्ले मिंटो सुधार लाया जिसे 1909 का अधिनियम कहते हैं। इसके द्वारा मुसलमानों को पृथक निर्वाचक क्षेत्र दे दिया गया। कांग्रेस ने भी इस प्रस्ताव को 1916 के लखनऊ अधिवेशन में स्वीकार कर लिया। मिंटो II को भारत में समप्रदायिकता का जनक कहते हैं।

हार्डिंग II (1910-1916) :- इसने बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया और 1 जनवरी, 1912 से भारत की राजधानी दिल्ली कर दिया। इसके समय प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ था।

रिडिंग (1921-1926) :- इनके समय चौड़ी-चौड़ा काण्ड हुई, जिस कारण असहयोग आंदोलन समाप्त हो गया। भारत में पहलीबार (ICS) (UPSC) की परीक्षा 1922 में इलाहाबाद में हुई।

इर्विन (1926-1931) :- साइमन कमिशन, दाण्डी मार्च, सविनय अवज्ञा आंदोलन, प्रथम तथा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन इसी के समय भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी दी गई।

वेलिंगटन (1931-1936) :- तृतीय गोलमेज सम्मेलन हुआ जिसमें समप्रदायिक पंचांग की घोषणा कर दी गई। इसके समय भारत शासन अधिनियम 1935 पारित हुआ।

लिनिथिगो (1936-1943) :- प्रांतिय चुनाव 1937, II world war, क्रिप्स प्रस्ताव, भारत छोड़ो।

वेवेल (1943-1947) :- शिमला सम्मेलन, कैबिनेट मिशन, अन्तरीम सरकार, संविधान सभा।

माउट वेटन (1947-1948) :- ये 34वें अंग्रेज वायसराय थे। इन्होंने भारत को स्वतंत्र करा दिया।